विभिन्न मंत्रालयों में राष्ट्रभाषा का प्रयोग सुनिश्चित हो

सुरेन्द्र अग्निहोत्री
लखनऊ (उ.प्र.)

उत्तर प्रदेश में हिन्दी रुपी खड़ी बोली ने भले ही आधार पाया हो लेकिन आज अपने आंगन में न रो पा रही और न ही मुस्करा पा रही है। हिन्दी को एक आधार देने में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, हिन्दुस्तानी एकेडमी, नागरी प्रचारणींय सभा, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान तथा केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा साहित अनेक संस्थान है। हिन्दी संस्थान के आकार लेने के पूर्व सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग ने हिन्दी के विकास के लिये अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों भाषाई सवेक्षणों के साथ–साथ त्रिपथगा नामक पत्रिका का प्रकाशन किया था। इस पत्रिका जैसी एक भी पत्रिका प्रदेश का कोई संस्थान आज तक नही निकाल सका। हिन्दी भले ही अपने ही घर में बेगानी नजर आये लेकिन तथ्य बताते हैं कि भारत के बाहर 165 विश्वविद्यालयों में हिन्दी के अध्ययन और अध्यापन की व्यवस्था है। आधुनिक अद्यौगिक विकास के प्रमुख केन्द्र के रूप में उभर रहे भारत में ओद्यौगिक उत्पादन का वर्चश्व कायम करने के लिये दुनिया भर के बड़े–बड़े उत्पाद निर्माता अपनी बात हिन्दी में कहने के लिये विवश हुये हैं। दुनिया भर में इंटरनेट का उपयोग करने वाले दस करोड़ लोगों में 40 फीसदी हिन्दी भाषी हैं। छायावादी काव्य धारा की शीर्ष स्तम्भ महादेवी वर्मा के शब्दों में आज राष्ट्रभाषा की स्थिति के संबंध में विवाद नही है, पर उसे प्रतिष्ठित करने के साधनों को लेकर ऐसी विवादेषणा जागी है कि साध्य ही दूर से दूर तक होता जा रहा है। विवाद जब तर्क की सीधी रेखा पर चलता है, तब लक्ष्य निकट आ जाता है। पर जब उसके मूल में आंशका, अविश्वास और अनिच्छा रहती है, तब कहीं न पहुंचना ही उसका लक्ष्य बन जाता है।

जहां तक हिंदी का प्रश्न है, वह अनेक प्रादेशिक भाषाओं की सहोदरा और एक विस्तृत विविधता भरे प्रदेश में अनेक देशज बोलियों के साथ पलकर बड़ी हुई है। अवधी, ब्रज, भोजपुरी, मगही, बुंदेली, बघेलखंडी आदि उसकी शूल में बोलने वाली चिर सहचारियां है। इनके साथ कछार और सोतों, मचान और झोपड़ियों, निर्जन और जनपदों में घूम–घूमकर उसने उजले आंसू और रंगीन हंसी का संबल पाया है। हिंदी के प्रादेशिक और भारतीय रूप से भी चर्चा के विषय बन रहे है। यह प्रश्न बहुत कुछ ऐसा है, जैसे एक हृदय के साथ दो शरीरों की परिकल्पना। हिंदी की विशेषता उसकी मुक्ति में रही है, इसका प्रमाण उसके शब्दकोष में मिल सकेगा। उसने देशज बोलियों तथा देशी–विदेशी भाषाओं से शब्द संग्रह करने में न कभी संकीर्णता दिखाई और न उन्हें अपना बनाने में सुविधा का अनुभव किया। परंतु विकसित, परिमार्जित और साहित्यवती भाषा का कोई सर्वमान्य रूप या मानदंड न हो, ऐसा संभव नही होता। आज हिंदी में साहित्य सृजन करने वोलां में कोई बिहार का मगही भाषी है, कोई मथुरा का ब्रज भाषी। परंतु बुंदेलखंडी बोलने वाले राष्ट्रकवि मैथिलीशरण, वैसवाड़ी बोलने वाले कविवर निराला और कुमाऊंनी बोलने वाले श्री सुमित्रानंदन जी क्या समान रूप से हिंदी के वरद पुत्र नही कहे जाते। यदि हिंदी को बिहार हिंदी अवधी हिंदी, बुंदेली हिंदी नही बनाया जा सकता है तो उसका कारण हिंदी का वह सोशिष्ट रूप और मूलगत गठन है, जिसके बिना कोई भाषा महत्व नही पाती। इन्दौर (म.प्र.) में आयोजित अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन में पूर्व राष्ट्रपति स्व. ज्ञानी जैल सिंह द्वारा व्यक्त यह कथन अंग्रेजी ने राम को रामा और कृष्ण को कृष्णा बना दिया सिर्फ शब्द उच्चारण भेद को ही इंगित नही करता बल्कि हमारे नैतिक पतन को भी इंगित करता है। कितने शर्म की बात है हमारे मार्गदर्शक भगवान राम और भगवान कृष्ण को अंग्रेजी ने कितना उपभ्रंश रू प में प्रस्तुत किया जबकि हम स्वर उच्चारण को ही ईश्वर आराधना एवं मंत्र विज्ञान में महत्वपूर्ण मानते हैं। मध्यप्रदेश के दमोह जिले में अंग्रेजी माध्यम से स्कूल सेंट जॉन की कक्षा तीन में पढ़ने वाली मानसी अपने साथियों से हिंदी में बात कर रही थी। हिंदी बोलता देख अध्यापक ने उसकी पिटाई कर दी। अध्यापक का कहना था कि स्कूल परिसर में हिंदी में बात करना मना है। हिन्दी में शपथ लेने के सवाल पर महाराष्ट्र असेंबली के भीतर मनसे विधायकों ने

समाजवादी पार्टी के एमएलए अबू आजमी को पीटा था। तब मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सख्त लहजें में टिप्पणी की थी– यह मुल्क, संविधान और राष्ट्रभाषा की अस्मिता का मामला है– ''हिंदी की बेइज्जती बर्दाश्त के बाहर है''। उत्तर प्रदेश को हिन्दी का हृदय–प्रदेश कहा जाता है।

उत्तर प्रदेश में हिन्दी भाषा, साहित्य और इसके सृजनकारों की स्थिति सम्मानजनक बनाने के लिए तेजी के साथ कार्य हुआ है। देश के अन्य प्रदेशों में सभी हिन्दी अकादमियाँ/संस्थान केवल मात्र अपने–अपने प्रदेश की सीमाओं में रहने वाले साहित्यकारों के हितार्थ कार्य करती हैं–उनकी कृतियों के प्रकाशन में आर्थिक सहायता देती हैं, भाषा व साहित्यिक आयोजन करती हैं व प्रदेश में होने वाले ऐसे ही आयोजनों में अपना सहयोग प्रदान करती हैं, प्रदेश के साहित्यकारों को ही सम्मान/पुरस्कार देती हैं, प्रदेश से बाहर के लोगों को बिल्कुल भी नहीं। दूसरी ओर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान देश भर के साहित्यकारों को सम्मान/पुरस्कार देता है। उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी का प्रदेश में संगीत और नाटक को संरक्षण देने के लिए गठन हुआ, लेकिन बुन्देली, भोजपुरी, अवधी तथा ब्रज भाषा के लोकसंगीत तथा नाटकों की दिशा में कोई ठोस पहल नही हुई है। म.प्र. में अलखनन्दन ने नटबुन्देली भाषा में नाटक रचकर सारी दुनिया में बुन्देली भाषा का ढंका बजाया था। लेकिन उत्तर प्रदेश में ऐसा प्रयास क्यों नही हो सका? बुन्देली लोक नृत्य राई से लेकर स्वाग, नौटंकी, चेता, विराह, कजली, फागे, लेद, ढिमरयाई जैसे गीत संगीत के अनेक पक्ष उत्तर प्रदेश की धरती पर मौजूद है लेकिन अकादमी इनके उत्थान के लिऐ कुछ भी नही कर सकी। अकादमी की पत्रिका केवल खानापूर्ति कर रही है। कामोबेश ऐसा ही हाल है राज्य ललित कला अकादमी का भी है। माडर्न आर्ट के नाम पर छुटपुट प्रयास तक सिमट गया यह सफेद हाथी लोक चित्रकला एवं भित्ति चित्र के अलावा पर्व विशेष के रेखांकन की जो परम्परा बृज बुन्देलखण्ड में सदियों से चली आ रही है उसे ऊचाई देने के लिऐ यह संस्थान कुछ भी नही कर सका। पीतल और मिट्टी की ढलवा मूर्ति कला तथा पाषाण की मूर्ति कला को विकसित करने में यह संस्थान सार्थक भूमिका अदा कर सकता था। लेकिन कुछ भी नही कर सका। आज भी हम अच्छे ज्ञान के लिए अंग्रेजी का सहारा क्यों लेते हैं? यह प्रश्न 1875 के अप्रैल अंक ''हरिश्चंद्र चंद्रिका'' में भारतेंदु द्वारा एवं विधिपत्रिका ''नीति प्रकाश'' के प्रकाशन के पूर्व छापा गया। हिन्दी में बहुत से अखबार है पर हमारे हिन्दुस्तानी लोगों को उनसे कानूनी खबर कुछ नही मिलती है और न हिंदी में से स्पष्ट होता है जो हालत आज से 137 वर्ष पूर्व थी वह आज है। आज समय रहते हिन्दी प्रदेशों के मुख्यमंत्री केन्द्र सरकार पर दबाओं डाले कि केन्द्र सरकार के द्वारा दोनों सदनों में तथा विभिन्न मत्रालयों में राष्ट्रभाषा का प्रयोग सुनिश्चित करे तथा राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करे। साथ ही साथ देशवासियों को भी हिन्दी के साथ प्रादेशिक भाषाओं के प्रति उचित सम्मान प्रदान करे। आज हमें हिन्दी दिवस के अवसर पर शपथ लेना होगा। हमें अंग्रेजी रूपी चेरी को राष्ट्रभाषा सिंहासन से उतार कर हिन्दी को उसकी जगह प्रतिष्ठित करके गांधी और विनोबा के स्वप्न को साकार करने में अपनी–अपनी सार्थक भूमिका अदा करनी होगी।